



O.P. JINDAL GLOBAL
INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE
UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service



I.D.E.A.S.
OFFICE of
INTERDISCIPLINARY STUDIES

हरियाणा की आवाज़

HARYANA KI AWAAZ

Volume III Issue III

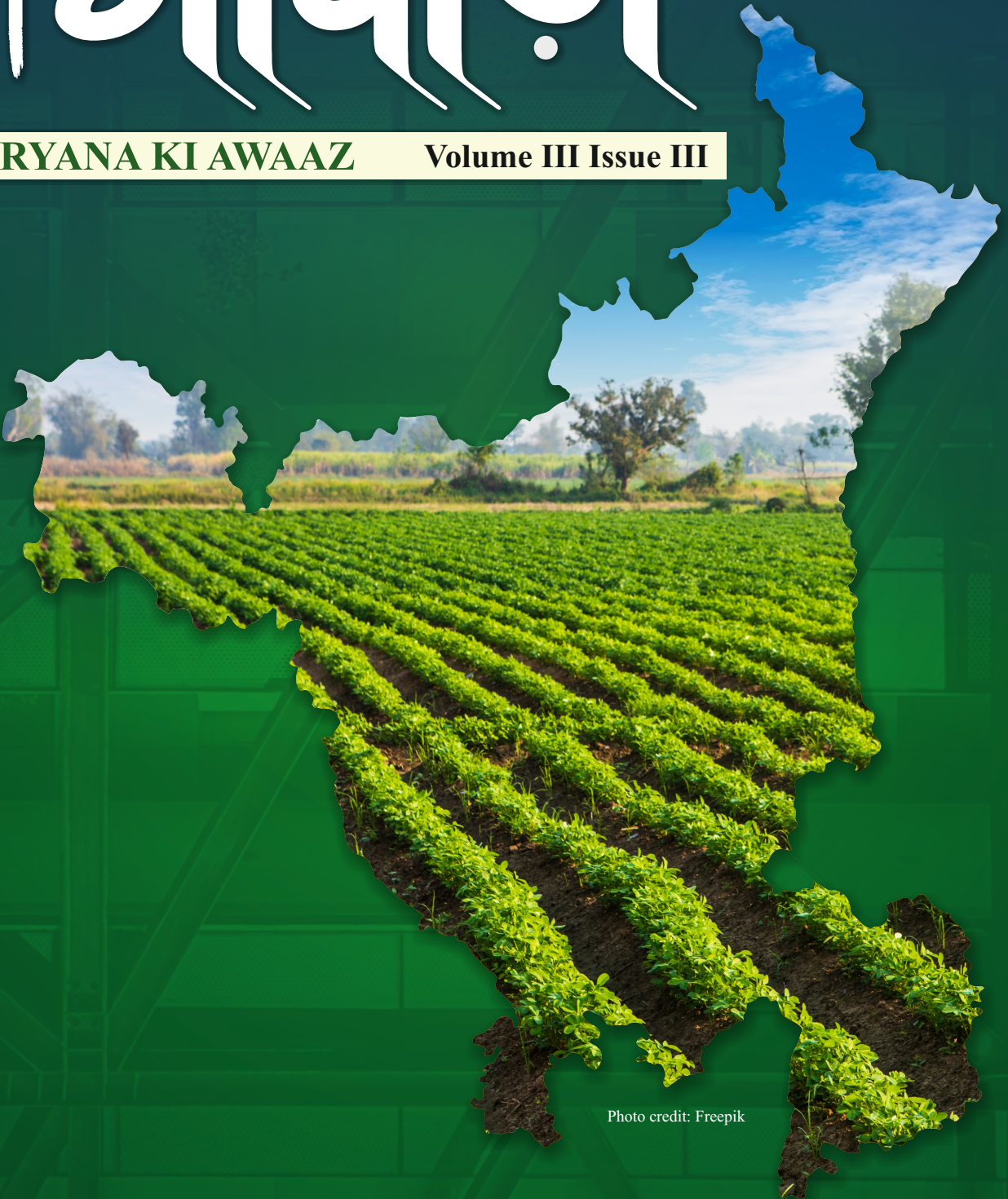


Photo credit: Freepik

आभार

हम इस अंक के सम्पादन, रूपरेखा और प्रस्तुति में योगदान के लिए डॉ प्राची हुड्डा और अंकित दहिया को धन्यवाद देना चाहते हैं। इस अंक के हिंदी अनुवाद के लिए वीना हुड्डा के सहयोग को भी धन्यवाद देते हैं।

हम दादा भूरे खां पर मिले सभी रेस्पोंडेंट्स को भी धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने हमारे साथ अपना समय और अनुभव साझा किया।





हरियाणा के नाम



डॉ प्राची हुडा

क्यूरेटर

हरियाणा के बारे में हमेशा एक सामान्य धारणा रही है: देहाती, अत्यधिक पितृसत्तात्मक और महिलाओं के प्रति हिंसक। इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र और इसके लोगों का एकपक्षीय चित्रांकन हुआ है। यह चित्रांकन इस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं व बहुमुखी विचारधारा को स्पष्टता से उजागर नहीं करता। साथ ही मास मीडिया और बुद्धिजीवी वर्ग भी यहाँ के लोगों के अनुभवों और सामाजिक भिन्नताओं को समझने में निष्फल रहे हैं।

“प्रगतिशील” विश्वविद्यालयों में मैंने खुद ये अनुभव किया कि इस क्षेत्र से आने वालों को एक सामान्य धारणा का सामना करना पड़ता है। यह मुख्यतः “तुम हरियाणवी नहीं लगते” या “तुम हरियाणवी की तरह बात नहीं करते” जैसी टिप्पणियों और व्यंग्यों के रूप में होता है। यह भी आंशिक रूप से बॉलीवुड में हरियाणा के लोगों के चित्रण से प्रभावित है, जहां अभिनेता उस भाषा को बोलने की कोशिश करते हैं जो हरियाणा में बोले जाने वाली विभिन्न बोलियों से कहीं भी मेल नहीं खाती। इस सामान्य रूप से किये जाने वाले गलत चित्रण (जो केवल वे लोग करते हैं जो इस क्षेत्र से नहीं हैं) को चुनौती भी दी जा रही है। अब वर्तमान समय में कुछ बुद्धिजीवी और युवा वर्ग द्वारा इन धारणाओं को चुनौती देने और जमीनी स्तर की आवाजों के लिए जगह बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इस संदर्भ में, यह मासिक अंक “हरियाणा की आवाज़” इस क्षेत्र और इसके लोगों के बारे में अत्यधिक सरल धारणा को चुनौती देने की एक छोटी सी पहल है, जो हरियाणा के लोगों को अपनी कहानियाँ और अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका उद्देश्य उन्हें उन सक्रिय कर्ता के रूप में प्रस्तुत करना है जो वे हमेशा से रहे हैं, लेकिन जिसके लिए उन्हें कभी पर्याप्त पहचान नहीं मिल पायी। प्रत्येक अंक हरियाणा के सांस्कृतिक विशेषताओं और इसके विविध सामाजिक समूहों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगा।

मैं ओ.पी. जिंदल ग्लोबल विश्वविद्यालय (JGU) के ऑफिस ऑफ़ इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज (IDEAS) की आभारी हूँ, जिन्होंने इस पहल को समर्थन प्रदान किया।





वॉल्यूम III – हरियाणा की धार्मिक प्रवृत्तियां

अंक III - पितृ पूजा

हरियाणा में रोज़मर्रा की आस्था केवल बड़े और औपचारिक धार्मिक स्थलों तक सीमित नहीं है। यह लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा है। दादा थान, पीर, स्थानीय माताएँ, लोकदेवता और डेरे — ये सब मिलकर ग्रामीण हरियाणा की आध्यात्मिक दुनिया को आकार देते हैं।

गाँवों में सामाजिक और धार्मिक जीवन अक्सर स्थानीय संतों और लोकदेवताओं के इर्द-गिर्द संगठित होता है। इन परंपराओं को जीवित रखने में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। वे साल भर फसल का अन्न, गुड़ और घर में बने साधारण मिष्ठान गाँव के थानों और मढ़ियों पर चढ़ाती हैं। ये चढ़ावे केवल रस्म भर नहीं होते, बल्कि सुरक्षा और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति होते हैं। लोग इन देवताओं की शरण में बीमारी और विपत्ति से बचने के लिए जाते हैं, और परिवार तथा पशुधन की कुशलता की कामना करते हैं।

कुछ लोकदेवता, जैसे गुगा पीर, हरियाणा से बाहर भी व्यापक रूप से पूजे जाते हैं। वहीं खेड़ा या दादा थान जैसे स्थल किसी विशेष गाँव या गोत्र से जुड़े होते हैं और उस धरती की स्मृति और पहचान का हिस्सा बन जाते हैं। पितरों को समर्पित स्थानों पर परिवार अपने पूर्वजों को याद करते हैं और उनका आशीर्वाद मांगते हैं। कई बार किसी छोटे-से गाँव का थान समय के साथ साथ आसपास के इलाकों में भी लोकप्रिय होने लगता है और एक मान्यता प्राप्त तीर्थ का रूप ले लेता है। ऐसी लोकआस्थाएँ केवल हरियाणा तक सीमित नहीं हैं, पर यहाँ इनकी अपनी अलग छवि है, जो कृषि-आधारित जीवन और स्थानीय स्मृतियों से गहराई से जुड़ी है।

इस अंक में हमने इन जीवंत परंपराओं पर विचार एकत्र किए हैं। लोकदेवताओं और पितृ-स्थलों पर ध्यान केंद्रित करते हुए हमारा प्रयास है कि ग्रामीण हरियाणा की उस आस्था-परंपरा को सामने लाया जाए, जो आज भी लोगों के जीवन का केंद्र है।



कबीरपुर में दादा छुलाये

कबीरपुर में दादा छुलाये को सबसे पहले गांव के रक्षक के रूप में जाना जाता है। गांव के बुजुर्गों के अनुसार, पुराने समय में जब गांवों पर हमले आम बात थे और जीवन असुरक्षित था, तब दादा छुलाये गांव के एक बुजुर्ग थे जिन्होंने रात भर जागकर गांव की रक्षा करने का जिम्मा लिया। एक बार जब हमलावर आए, तो उन्होंने उनका सामना किया। इस दौरान वे घायल हो गए और पास के कुएं तक पहुंचे, जहां उन्होंने दम तोड़ दिया। यही कुआं आज भी मौजूद है और उनकी स्मृति का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

समय के साथ इस विश्वास को एक स्थायी रूप मिल गया है। आज जो पक्का और बड़ा ढांचा दादा छुलाये के नाम पर खड़ा है, वह हाल के वर्षों में बना है। गांव वालों के अनुसार, पहले यह स्थान बहुत साधारण था। दान और चंदे के बढ़ने के बाद इसे वर्तमान रूप दिया गया। लेकिन कुआं इससे कहीं पुराना माना जाता है। लोग मानते हैं कि इसके पानी में रोग ठीक करने की क्षमता है, और कई लोग अपने अनुभवों के आधार पर ऐसी बातें बताते हैं।

दादा छुलाये के प्रति आस्था गांव के सामाजिक नियमों, खासकर महिलाओं की भूमिका, से जुड़ी हुई है।

छोटी लड़कियां मंदिर में जा सकती हैं, लेकिन किशोरावस्था के बाद महिलाओं का अंदर जाना बंद हो जाता है। शादी के बाद एक बार दुल्हन अपने पति और परिवार के साथ आकर आशीर्वाद लेती है। इसके बाद उनका प्रवेश नहीं होता।

इस परंपरा को परिवार के रिश्तों के संदर्भ में समझा जाता है। दादा छुलाये को गांव का बुजुर्ग माना जाता है। इसलिए महिलाओं का दूरी बनाकर रखना सम्मान का हिस्सा माना जाता है।

हालांकि, महिलाओं की धार्मिक भागीदारी पूरी तरह से सीमित नहीं है। मुख्य स्थल के बाहर सात माताओं के छोटे-छोटे मंदिर बने हुए हैं। यहां महिलाएं नियमित रूप से पूजा करती हैं और खासकर नवरात्रों के दौरान दीये जलाती हैं।



सात माता





दादा खेड़ा, कबीरपुर

दादा खेड़ा के साथ तुलना करने पर यह फर्क और स्पष्ट होता है। वहां महिलाएं रोजाना पूजा में सक्रिय रहती हैं और स्थल को नहलाने जैसे काम करती हैं। दोनों जगहों पर आस्था है, लेकिन उसे निभाने के तरीके अलग हैं।

दादा छूलाये और खेड़ा की मान्यता केवल कबीरपुर तक सीमित नहीं है। पास का गांव शादीपुर भी इसी आस्था को मानता है। दोनों गांवों में ज्यादातर सैनी समाज के लोग रहते हैं, और कहा जाता है कि शादीपुर की स्थापना कबीरपुर से गए लोगों ने की थी।

इस साझा इतिहास के कारण दोनों गांवों के बीच भाईचारा बना हुआ है। यहां आपस में शादी-विवाह नहीं होते। इन स्थलों पर एक साथ आस्था रखना इस रिश्ते को आज भी बनाए रखता है।

दादा छूलाये में विश्वास आज भी उतना ही मजबूत है। कोविड-19 महामारी के दौरान गांव के कई लोगों ने वैक्सीन नहीं लगवाई। गांव वालों का कहना है कि यहां बहुत कम मौतें हुईं, और इसका कारण वे दादा छूलाये की कृपा को मानते हैं। यह विश्वास आज भी पूरी मजबूती के साथ बना हुआ है।

बदलता गांव, बदलती जिंदगी

पिछले दो दशकों में कबीरपुर में बड़े बदलाव आए हैं। सड़कों, संस्थानों और नए सेक्टरों के लिए जमीन अधिग्रहित की गई, जिससे खेती की जमीन काफी कम हो गई। कुछ लोगों ने समझदारी से दूसरी जगह जमीन खरीद ली, लेकिन कई परिवार खेती से दूर हो गए।

इसका असर रोजमर्रा की जिंदगी पर भी पड़ा है। गांव के युवा अब पढ़ाई और नौकरी के लिए सोनीपत या दिल्ली जाते हैं। गांव का जीवन अब शहर से जुड़ता जा रहा है।

महिलाएं भी इस बदलाव को साफ महसूस करती हैं। पहले वे घर के काम के साथ-साथ खेतों में भी काम करती थीं। अब खेत नहीं बचे, तो उनका काम कम हो गया है और उनके पास पहले से ज्यादा समय रहता है।

इन सभी बदलावों के बावजूद दादा छुलाये से जुड़ी परंपराएं अभी भी जारी हैं। नया बना ढांचा, पुराना कुआं, महिलाओं के प्रवेश के नियम, और पूजा के तरीके—ये सब आज भी गांव के जीवन का हिस्सा हैं।

कबीरपुर अब पहले जैसा गांव नहीं दिखता, लेकिन इन मान्यताओं के जरिए उसकी पहचान और जुड़ाव अब भी बना हुआ है—कबीरपुर में भी और शादीपुर में भी, जहां लोग आज भी खुद को एक ही परंपरा का हिस्सा मानते हैं।



कबीरपुर का एक परिवार: अपने समय और मेहमाननवाज़ी को लेकर बेहद उदार

टीम, हरियाणा की आवाज़



डॉ प्राची हुड्डा
लीड
हरियाणा की आवाज़



अंकित दहिया
मैम्बर एसोसिएट
हरियाणा की आवाज़

I.D.E.A.S. *at a* GLANCE

IDEAS OFFICE OF INTERDISCIPLINARY STUDIES



98+

Ideas Advisory
Council



60+

Research
and Publications



31+

Research
Fellow



10+

Institutional
Partnership



9

Initiatives



7+

Core
Faculty



6+

Research
Constellations



6+

Member
Associates

ABOUT US

The Office of Interdisciplinary Studies (IDEAS) at O.P. Jindal Global University (JGU) serves as a university-wide platform for fostering interdisciplinary teaching, research, and community engagement across the social sciences. It brings together scholars, students, and practitioners to co-create knowledge and develop innovative responses to complex real-world challenges.

At its core, IDEAS operates as an intellectual incubator, supporting collaborative scholarship, experimental pedagogy, and research that transcends traditional disciplinary boundaries. Through its initiatives and field-based programmes, it promotes critical inquiry, applied learning, and engagement with pressing development concerns.

With a strong emphasis on interdisciplinary dialogue, global academic exchange, and community-linked research, IDEAS aims to cultivate a dynamic academic environment that connects theory with practice and advances socially relevant scholarship.